प्रा.डॉ. हाके एम.आर.
गंगाखेड

(06)

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय
बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

THE VISION STATMENT O THE COLLEGE IS सत्कर्मी रती याढो

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेंनाज

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

५. आत्मकथा तथा निबंध विधा

85) समकालीन आत्मकथा 'कूडा कबाडा' में व्यक्त नारी चेतना
प्रा. डॉ. विजया दिगंबरराव गाढवे, परभणी ||218

86) समकालीन हिंदी आत्मकथा साहित्य में स्त्री चेतना (सबलीकरण के संदर्भ में)
प्रा. डॉ. सय्यद वाजिद सय्यद जीवन, परभणी ||220

87) समकालीन हिंदी आत्मकथा साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके, परभणी ||222

88) अभिशापों का अभिशाप : दोहरा अभिशाप
डॉ. सतीश वाघमारे, औरंगाबाद ||224

89) कौशल्या बैसंत्री कृत 'दोहरा अभिशाप' में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. मुनेश्वर एस. एल., नांदेड ||226

90) नारी चेतना की अभिव्यक्ति 'स्त्री-सुबोधिनी'
डॉ. सुभाष क्षीरसागर, हिंगोली ||228

91) समकालीन स्त्रीवादी साहित्य: 'श्रृंखला की कड़ियाँ में अभिव्यक्त स्त्री दृष्टि'
प्रा. सुरेन्द्रकुमार गिरधारीलाल साहु, नांदेड ||230

६. कविता विधा

92) स्त्री चेतना के परिप्रेक्ष्य में अनामिका की कविताएं
डॉ. निम्मी ए. ए., त्रिवंद्रुम ||233

93) निर्मला पुतुल की कविताओ मे आदिवासी स्त्री चेतना
डॉ. कांचन बाहेती (रांदड), नांदेड ||236

94) हिन्दी ग़जल में नारी विमर्श
डॉ. अविनाश कासांडे, बीड ||239

95) समकालीन कविता में स्त्री संघर्ष
डॉ. दिलीप सुखदेव फोलाने, प्रा. डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर ||241

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

87

समकालीन हिंदी आत्मकथा साहित्य में स्त्री चेतना

प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके
हिंदी विभाग, असोसिएट प्रोफेसर,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड जि.परभणी

आत्मकथा हिंदी साहित्य जगत की ऐसी विधा है जिसे आज पूर्ण रुप से महत्ता प्राप्त हो गई है। आज आत्मकथा लेखन हेतु आत्मकथाकार बडी सजगता और लगन बरत रहे है। आत्मकथा का अर्थ, 'जीवन की खरी कसौटी के रुप में लेखन से है'। आत्मकथा व्यक्तित्व के अन्य प्रकारों से सत्य का अधिकतम उद्‌घाटन करती है। आत्मकथा चाहे जिस युग में लिखी गई हो इसमें लेखक की रुचि उसके स्वभाव और जीवन से संबंधित उसके विशेष क्षेत्र की जानकारी मिलती है। इन सबको भूलकर वह अपनी आत्मकथा को विकसित कर ही नही सकता। १९३० ई.से आत्मकथाएँ अधिक लिखी जाने लगी।

अब धीरे धीरे आत्मकथाकार मात्र अपनी आत्मस्वीकृति को नही लिखता था बल्कि अंदर बाहर साफ साफ विचारों को स्पष्ट करता हुआ दुराव छिपाव नष्ट करता जा रहा था यही कारण है कि हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा को साहित्य जगत में खूब सराहा। आत्मकथाकार में प्रमुख है स्वामी दयानंद सरस्वति भारतेन्दु, अंबिका दत्त व्यास, गुलाबराय, श्यामसुंदर दास, वियोगी हरि, यशपाल, जानकी देवी बजाज, रामनरेश त्रिपाठी, मोहन राकेश, हरिवंशराय बच्चन, मन्नू भंडारी, अमृतलाल नागर, जानकी वल्लभ शास्त्री, विष्णु प्रभाकर, कौसल्या बैसंत्री, पद्‌मा सचदेवा, माहेश्वरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजेन्द्र यादव, कृष्णा अग्निहोत्री, कुसुम अंसल, रामृक्ष बेनीपुरी, बेनजीर भुट्टो, सुशीला टाकभोरे, आदि।

समकालीन हिंदी आत्मकथा साहित्य में स्त्री चेतना के अंतर्गत नारी की आत्मकथाएँ भी अपना एक अलग अस्तित्व रखती है। इनमें से कुछ आत्मकथाएँ निम्नलिखित है-

१. खानाबदोश:

'खानाबदोश' अजीत कौर की आत्मकथा है जिसे सन १९८६ का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। लेखिका अजीत कौर यहाँ जीवन के सत्य को स्वीकार करती है, जिस समय सतवंत कहती है कि वह सडक के मोड पर खडे है। उस समय वह कहती है "मेरा आदाब उनसे कह देना... बस"। उसने लेखिका को जोर से अपने गले लगा लिया। पत्नी के मन में लेखिका झाँकती है "औरत चाहे कितनी भी फराख दिल क्यों न हों, अपने मर्द के रास्ते में खडे होने वाली हर 'दुसरी औरत' उसकी छाती पर सिल-पत्थर बनकर बैठी होती है।"[१]

इसमें अपने प्रेमी ओमा के माध्यम से लेखिका ने पुरुष जाति के विचार, स्वभाव और अहम् को भी खुलकर चित्रित किया है। प्रेमिका के रुप में नारी कितनी भावुक, भोली और विश्वासपात्र होती है साथ ही कमजोर भी। मौजमस्ती करते समय प्रेमिका बहुत अच्छी लगती है लेकिन जिम्मेदारी बनाकर घर में रखना भारी हो जाता है। नारी जब किसी से प्यार करती है तो किसी नुकसान की परवाह किए बिना तन, मन, धन से अपने प्रेमी के साथ जीती है किंतु प्रेमी अपना साथ केवल उतना ही देता है जिसमें उसका मान, सम्मान बना रहे। उसकी मर्यादा को आँच न आए। इस प्रकार अजीत कौर के चित्रण में पाठकों को सीख प्राप्त होती है।

२. बूँद बावडी:

पद्‌मा सचदेव की आत्मकथा 'बूँद बावडी' एक ऐसी रचना कृति है जो पाठकों को सच्चाई से अवगत कराती है। आरंभ में उन्होंने स्वयं के बच जाने से किया है और कहती है कि "मैं एक बार फिर बच गयी हूँ। इस बार मौत के जबडे खोलकर बाहर आना पडा, पर मजा आ गया।"[२]

यह आत्मकथा उस औरत की कहानी है, जिसमें एक भोली भाली लडकी तथा एक साहसी, निडर स्त्री का दर्शन होता है। जिसने अपने पारिवारिक एवं ससुराल के अनुभवों से जो पाया वह आत्मकथा में उंडेल दिया। सामाजिक जीवन में लोगों के दो रुप देखे, जिसमें शैतान और भगवान दोनों नजर आए। इन सबको जान पहचान कर संसार में जीवन - ज्ञापन करते समय किस तरह जीना चाहिए यह सीखा है एवं सीखाती है। इस बारे में डॉ.सविता सिंह जी कहती है, "बूँद-बावडी एक ऐसी आत्मकथा जो पाठकों को अंदर तक देहला दे और फिर मानो स्वयं रास्ता भी बना दे।"[३] इस तरह जीवन में आनेवाली कठिनाईयों का सामना कर आगे बढने के लिए उर्जा भरने का कार्य यह आत्मकथा करती है।

३. दोहर अभिशाप:

'दोहरा अभिशाप' यह कौसल्या बैसंत्री जी द्वारा लिखित आत्मकथा है। इसमें लेखिका ने अपने जीवन के दोहरे संताप को व्यक्त किया है। एक स्त्री जीवन ऊपर से दलित जीवन। उनके गरीब,

दलित घर में कई लडकियों का जन्म हुआ, जिसमें कौसल्या जी भी एक थी। परिवार की गरीबी और माता पिता का मोल मजदूरी कर घर चलाने की जद्दोजहद को आत्मकथा में व्यक्त करती है। पुराने जमाने में दलित समाज की क्या स्थिति थी? ऊपर से नानी दादी का नारी जीवन किस तरह का था? दलित और स्त्रियों को शिक्षा और उन्नति से कैस दूर रखा गया था? इस तरह के कई बातों पर कौसल्या जी नजर डालती है।

लडकी-लडकों में किए जानेवाले भेदभाव और लडकी को कूडा-करकट समझने वाली सामाजिक मानसिकता का चित्रण करती है। आजी -आजोबा की कहानी के माध्यम से स्त्री को पुरुष द्वारा किए जानेवाले अत्याचारों को भी सहने के बाद पति से अलग होकर, अपने हक के लिए कानूनी लडाई भी लडती है। इस लडाई से होनेवाली मानहानी या परिवार की झूठी शान की चिंता नहीं करती। सिर्फ अपने हक और अधिकार के लिए लडती है। इस तरह एक दलित अछूत घर में जन्म और वह भी लडकी का जन्म लेने के कारण उठाने पडे दु:ख दर्द को इस आत्मकथा में व्यक्त करती है।

४. गुडिया भीतर गुडिया:

'गुडिया भीतर गुडिया' यह मैत्रेयी पुष्पाजी की दूसरी आत्मकथा है। इस आत्मकथा के बारे में डॉ. सरजू प्रसाद मिश्रजी कहते है कि, शीर्षक पढकर आत्मकथा साहित्य के पाठक को अंग्रेज कवि स्टेफन स्पेन्डर की आत्मकथा दुनिया भीतर दुनिया के शीर्षक का स्मरण हो आता है। एक नारी के अन्दर दो नारियाँ वर्तमान है। वह पत्नी भी है और लेखिका भी। पत्नी पर पडनेवाले प्रभावों से लेखिका अप्रभावित नही रह सकती। अब मैत्रेयी के स्त्री के अंदर की स्त्री बरसों से माँ और समाज को देखने आयी है, अब शादी के बाद पति को देख रही है। मैत्रेयी के भीतर की गुडिया चाहती है कि, पति उसके पास बैठे, उसको क्या चाहिए क्या नही? यह पूछे। लेकिन पति को पत्नी की इच्छाओं और आकांक्षाओ से कोई लेना-देना नही है।

इन आत्मकथाओं में माँ और पति के प्रति क्रोध एवं प्रेम दोनो व्यक्त करती है। 'गुडिया भीतर गुडिया' पति पत्नी के समझदारी से चलने का एक उत्तम उदाहरण है। जो अपनी अपनी बात और वर्तन के बावजूद अपना घर, परिवार, बच्चे और सामाजिक प्रतिष्ठा संभाले हुए है।

५. शिकंजे का दर्द:

'शिकंजे का दर्द' यह सुशिला टाकभौरे जी की आत्मकथा है। इसमें एक स्त्री और वह भी अछूत स्त्री की कहानी है। लेखिका परिवार रुखा-सुखा खाकर और बडे घरों से माँगकर लायी जूठन पर जीनेवाले परिवारों का प्रतिनिधित्व करता है। जिनको समाज ने अछूत कहकर ठुकराया है, उन जाति समुहों की पीडा इस आत्मकथा में व्यक्त हुई है। इसमें जिन सामाजिक, धार्मिक, कुरीतियों से निचली जाति के लोगों का जीवन प्रभावित होता है। अछूत परिवार में जन्मी सुशीला जी कई अभावों के बावजूद अपनी शिक्षा पूर्ण करती है। इसके लिए बहुत सारे अपमान और दु:खो को सह लेती है। स्कूल की पढाई पूरी करने के बाद कॉलेज जाना चाहती थी लेकिन सामाजिक परिवेश के कारण घर से अनुमति नही मिल रही थी। फिर भी बडे अनुनय कर घरवालों को मनवाकर कॉलेज में दाखिल हुई थी।

"शादी तय होने पर अपने उम्र से अठारह साल बडे दूल्हे का चुपचाप स्वीकार कर लिया था। इसे अपना भाग्य मानकर चल रही थी। पढ़ा लिखा, शिक्षक पति मिलने के बावजूद घरेलू हिंसा और प्रताडना को सहना पडा था। सास और ननंद से बार-बार अपमानित होना पडा था। पति से गंदि-गंदि गालियाँ, मार-पीट बात-बात पर खरी खोटी सुनना। यह सब तब भी चलता है, जब सुशीला जी प्राध्यापिका बनकर अच्छी तनख्वाह पाती है। फिर भी इज्जत और प्यार के लिए तरसना पडता है।"[४]

निष्कर्षत: यह कह सकते है कि, 'शिकंजे का दर्द' यह एक गरीब, अछूत समझे जानेवाले समाज की लडकी की कहानी है। जिसने अपनी मेहनत, लगन और प्रतिभा से एक विशाल व्यक्तित्व बनाया है। जो भारत की पिछडी जातियों और स्त्री वर्ग के लिए एक आदर्श बन चुकी है।

६. एक कहानी यह भी:

मन्नू भंडारी जी की आत्मकथा, 'एक कहानी यह भी' सन २००७ में प्रकाशित हुई। मन्नू जी इसे आत्मकथा नहीं मानती, वह इसे अपनी जिंदगी की कहानी का एक अंशमात्र मानती है। मारवाडी जैन परिवार में जनम लेनेवाली मन्नू जी को पिता सुखसम्पतराय से आर्य समाजी विचार मिलें। राजेंद्र यादव जी से मन्नू भंडारी ने शादी की। विवाहीत जीवन की शुरुआत करने से पहले लेखकीय अनिवार्यता के नाम पर राजेन्द्र ने समान्तर जिंदगी का आधुनिकतम पैटर्न थमाते हुए कहा, "देखो छत जरुर हमारी एक होगी लेकिन जिन्दगियाँ अपनी अपनी होगी बिना एक दूसरे की जिन्दगी में हस्तक्षेप किए बिलकुल स्वतंत्र, मुक्त और अलग।"[५]

इस बात को मन्नू जी उस समय समझ नहीं पायी थी। दरअसल बात यह थी कि शादी से पहले राजेन्द्र जी का दुसरी लडकी से प्रेम था और वह शादी के बाद भी जारी रहा। निष्कर्षत: कह सकते है कि, मन्नूजी कितनी भी सफाई दे कर कहें कि यह आत्मकथा केवल जीवन की लेखन यात्रा पर केंद्रित है। लेकिन इस कहानी से यह भी स्पष्ट होता है कि, इस कहानी की स्त्री नायिका पुरुष सत्ता के शोषण

का शिकार हुई है। मन्नू भंडारी इतनी बडी व्यक्तित्व की धनी लेखिका वह भी शोषण से बच नही पायी है। राजेन्द्र यादव जी जो स्त्री विमर्श का बोल बाला करते है वे अपनी पत्नी के प्रति न्याय नही कर पाए। इसलिए एक कहानी यह भी से यह सीख मिलती है कि, अन्याय, अत्याचार, शोषण केवल अनपढ, अशिक्षित और गाँव - देहातों में रहनेवाली स्त्रियों पर ही नही होता बल्कि किसी भी स्त्री पर हो सकता है।

७. मेरी आप बीती:

बेनजीर भुट्टो की आत्मकथा का अनुवाद अशोक गुप्ता एवं प्रणय रंजन तिवारी जीने किया है। इस आत्मकथा में बेनजीर भुट्टोने अपनी आप बीती कही है। पाठकों के रोये खडे कर देनेवाली यह आत्मकथा है। एक मुस्लिम महिला के प्रथम प्रधानमंत्री बनने की कथा है। उन्होंने सारी लडाइयाँ उद्देश को सामने रखकर लडी। वह समाज के दोहरे मापदण्ड की शिकायत नही करती है बल्कि दुगनी मेहनत से जीतने की सलाह देती है।

इस आत्मकथा की विशेषता यह है कि एक ओर बेनजीर भुट्टो राजनीति से बुरी तरह जूझती हुअी दिखायी देती है किंतु दुसरी और बडी ही मासूमियत से बच्चों के पालने में भी व्यस्त रही है। प्रधानमंत्री बनने के बाद दूसरे बच्चे का जन्म और ऐसे में युध्द, गर्भ की अवस्था में सियाचिन ग्लेश्यिर की सरहद पर जाना जहाँ ऑक्सिजन की कमी होती है, लेकिन वह गयी और बच्चा भी बाद में सुरक्षित जन्मा यह एक नारी ही कर सकती है, भले ही वह किसी जाति, धर्म या देश की हो। युध्द की आशंका से वह फौजी दोस्तो का हौसला बढाने गयी थी।

इस प्रकार एक मुस्लिम महिला के घर परिवार से निकलकर अमेरिका से शिक्षा लेकर फिर राजनीति के दाँव पेंच से जूझते हुए प्रधानमंत्री तक, परंपरा तोडकर उन्नति की सीढियाँ चढकर मौत को असमय गले लगाने की यह एक आत्मकथा है।

इस प्रकार सभी आत्मकथा में नारी चेतना अधिक से अधिक दिखायी है।

संदर्भ:

१. खानाबदोश - अजीत कौर, पृष्ठ ५०
२. बूँद बावडी - पद्मा सचदेव, पृष्ठ ०७
३. हिंदी आत्मकथा - डॉ.सवितासिंह, पृष्ठ २२९
४. अल्पसंख्यकोंका विचार विश्व - डॉ.शहाबुद्दिन शेख, पृष्ठ २८५
५. एक कहानी यह भी - मन्नू भंडारी, पृष्ठ ५६

❑❑❑

88

अभिशापों का अभिशाप : दोहरा अभिशाप

डॉ. सतीश वाघमारे
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, औरंगाबाद

****

दलित-स्त्री की आत्मकथा सामान्य जीवन से हटकर एक अलग अनुभूति-विश्व को साकार करती है और उसी में से समाज-संस्कृति और धर्मव्यवस्था का परिचय मिलता है। जीवन के बीते हुए दिन गरिमामय, सुनहरे कदापि नहीं रहें। फिर भी भूतकाल से ये महिलाएँ रिश्ते जोड़ती रहती है और भूतकाल का स्तर जैसे-जैसे खुलता जाता है वैसे-वैसे व्यथा ही व्यथा सामने आती है। इनमें न कोई श्रृंगार पक्ष है, न श्रृंगार कक्ष। दलित स्त्री का दुख-दर्द किसी अन्य स्त्री का नहीं हो सकता। नसीब से या नियति-निर्मित यह दुःख नहीं है, बल्कि इस संस्कृति ने उसे हमेशा अप्रतिष्ठित रखा। कौसल्या बैसंत्री के आत्मकथा में सच्चाई और इमानदारी ही है। इनके आत्मकथा में 'स्व' के चित्रण के साथ अस्पृश्य समाज, उनकी दरिद्रता, अज्ञान चित्रित हुआ है। जाति के कारण अपमानित जीवन, भोगे हुए अत्याचार, पीड़ा इन सबका चित्रण आत्मकथा में आया हैं।

भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों के लिए सामाजिक जीवन की बात जाने दों ठीक-ठीक जीवन भी नशीब में नहीं है। भारतीय दलित स्त्री तो दलितों में दलित है। हिन्दी की पहली दलित स्त्री की आत्मकथा कौसल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' है। लेखिका ने अपने शापित जीवन का जीवन्त दस्तावेज आत्मकथा के माध्यम से सामने रखा है। उनका कहना है कि दलित होना पाप और शाप है। लेकिन दोहरा अभिशाप यह है कि दलित स्त्री होना। दलित स्त्री को पुरूषों से अधिक अभिशाप झेलना पड़ता है।

सामाजिक सत्य को स्पष्ट करते हुए लेखिका कहती है कि, हर एक स्त्री को रोटी से भी अधिक कपडा महत्त्वपूर्ण होता है। शरीर को ढकने के लिए कपड़ा अत्यावश्यक ही है लेकिन दलित स्त्री के नशीब में ठीक कपड़ा भी नहीं होता वह लिखती है कि, "बाबा को मिल में मशीन साफ करने के लिए कुछ नए कपडे की पट्टिया